पहुनाई करने की उत्तम कला (28:1-15)

दोपहर की धूप में इब्राहीम अपने तम्बू के दरवाज़े पर आराम कर रहा था। आंखें उठाकर उसने तीन अजनबियों को आते देखे। आगे बढ़कर, वह झुका और उनसे बिनती की:

> हे प्रभु, यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है तो मैं बिनती करता हूं, कि अपने दास के पास से चले न जाना। मैं थोड़ा सा जल लाता हूं और आप अपने पांव धोकर इस वृक्ष के तले विश्राम करें। फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आऊं और उससे आप अपने अपने जीव को तृप्त करें; तब उसके पश्चात आगे बढ़ें: क्योंकि आप अपने दास के पास इसी लिए पधारे हैं ... (उत्पत्ति 18:3-5)।

एक नौकर द्वारा उन अतिथियों के पांव धोने तक, इब्राहीम ने सारा को भोजन तैयार करने के लिए कह दिया और स्वयं भागकर उसने झुण्ड में से एक अच्छा सा बछड़ा लिया और नौकर को उसे काटने के लिए कहा। फिर वह भोजन तैयार होने तक अतिथियों के सत्कार के लिए उनके पास चला गया। भोजन के दौरान, उन रहस्यमयी अजनबियों ने यह घोषणा करके इब्राहीम को हैरान कर दिया कि अगले वर्ष उसके और सारा के घर एक बच्चा जन्म लेगा, बेशक दोनों ही बच्चे को जन्म देने की उम्र को पार कर गए थे। भोजन कराने के बाद, इब्राहीम अच्छे मेजबान की तरह उन्हें अलविदा करने बाहर तक उनके साथ गया। बातें करते-करते, उसे पता चला कि वे परमेश्वर की ओर से भेजे गए दूत थे (उत्पत्ति 18:16-33)!

पुराने नियम की इस घटना को नये नियम में विशेष महत्व दिया गया है: ''पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है'' (इब्रानियों 13:2)।

पहुनाई करना बाइबल की एक महत्वपूर्ण शिक्षा है। व्यावहारिक मसीहियत के एक महान अध्याय अर्थात रोमियों 12 में, पौलुस ने इन शब्दों को शामिल किया: ''पवित्र

लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उस में उन की सहायता करो; पहुनाई करने में लगे रहो'' (रोमियों 12:13)। प्राचीन की एक योग्यता यह है कि वह पहुनाई करने वाला होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:8)। पतरस ने कहा, ''बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे की पहुनाई करो'' (1 पतरस 4:9)।

क्या हम वास्तव में पहुनाई का अर्थ जानते हैं? दूसरों को अपने घरों में निमन्त्रण देने वाले को हम ''मेहमाननवाज़'' कहते हैं। बाइबल के अनुसार उन्हें पहुनाई करने वाले भी कहा जा सकता है और नहीं भी।

अनुवादित शब्द ''पहुनाई करने वाला'' यूनानी शब्द ''प्रेम'' (*philos*) के साथ ''अजनबी'' (*xenos*) शब्द का मेल है। इस प्रकार यूनानी शब्द का मूल अर्थ है ''अजनबी से प्रेम करने वाला।''[1] इब्राहीम द्वारा किए गए इन तीन लोगों के सत्कार के उत्कृष्ट उदाहरण पर दोबारा ध्यान दें: वह उनसे पहले कभी भी नहीं मिला था अर्थात उसके लिए वे अजनबी थे।

बाइबल मेहमाननवाज़ी के बदले में कुछ लौटाने को नहीं कहती; इसका अर्थ उन मित्रों का सत्कार करना नहीं है जो बदले में हमारा सत्कार करेंगे; इसका अर्थ पार्टियां देना भी नहीं है। बल्कि, *यह उन लोगों के प्रति दया दिखाना है जिन्हें उस दया को लौटाने के लिए कभी भी साधन या अवसर नहीं मिलेगा* (नोट मत्ती 5:46, 47)।

सारे पुराने नियम में, परदेशियों के लिए परमेश्वर द्वारा विशेष प्रबन्ध किया गया था:

> परदेशी पर अन्धेर न करना; तुम तो परदेशी के मन की बातें जानते हो, क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे (निर्गमन 23:9)।
>
> और अपनी दाख की बारी का दाना दाना न तोड़ लेना, और अपनी दाख की बारी के बड़े हुए अंगूरों को न बटोरना; उन्हें दीन और परदेशी लोगों के लिए छोड़ देना; ... (लैव्यव्यवस्था 19:10)।
>
> जो परदेशी तुम्हारे संग रहे वह तुम्हारे लिए देशी के समान हों, और उससे अपने ही समान प्रेम रखना; क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे; ... (लैव्यव्यवस्था 19:34)।[2]

नये नियम में परदेशियों पर दया करने पर ज़ोर देना जारी रखा गया: न्याय के समय, अपने दाहिने हाथ वाले लोगों से प्रभु कहेगा, ''मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया'' (मत्ती 25:35ग), जबकि बायें हाथ वालों से वह कहेगा, ''मैं परदेशी था और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया'' (आयत 43क)। फिर, विशेष महिला दासों की योग्यताओं में से यह बात भी है कि उसने ''... पाहुनों की सेवा की हो, ...'' (1 तीमुथियुस 5:10)।[3]

पहुनाई का अभिप्राय इस तथ्य को पहचानना है कि हम में से हर कोई कभी न कभी परदेशी होता है। हमें दूसरों से उसी प्रकार का व्यवहार करना चाहिए जिस प्रकार का हम अपने लिए चाहते हैं। इब्राहीम को पता था कि परदेशी और बाहर का आदमी होने का क्या अर्थ है। उसने कनान के निवासियों को बताया, ''मैं तुम्हारे बीच पाहुन [अस्थाई प्रवासी] और परदेशी हूं'' (उत्पत्ति 23:4क)।

उस समय की कल्पना कीजिए जब आप परदेशी होते हैं। शायद आप उस कवि की तरह हों जिसने लिखा है कि,

> ऐसी दुनिया में जो मैंने कभी नहीं बनाई।
> मैं, एक परदेशी और भयभीत हूं।

आप थॉमस वोल्फे से सहमत हो सकते हैं: ''हम में से कौन है जो कभी परदेशी और अकेला न हुआ हो?'' हम में से हर कोई ''परदेशी और अकेला'' होता है। इसलिए, हमें अपने समाज के ठुकराए लोगों तक पहुंचना चाहिए।

यदि पुराने नियम का मेहमाननवाज़ी का उत्कृष्ट उदाहरण इब्राहीम और तीन अजनबियों वाला है, तो नये नियम का उत्कृष्ट उदाहरण प्रेरितों 28 में मिलता है। बहुत से बच्चों ने यह अध्ययन करके कि मिलेतुस के लोग किस प्रकार पौलुस के प्रति दयालु थे, बाइबल की मेहमाननवाज़ी के बारे में सीखा है। प्रेरितों 28:1–15 रोम पहुंचने के लिए पौलुस के संघर्षों के वृत्तांत की एक मणि है।

पौलुस, उसके मित्र व जहाज़ में यात्रा कर रहे उसके सहयात्री भूमध्य सागर में स्थित एक छोटे से टापू मिलेतुस के किनारे पहुंच गए थे। अगले तीन महीनों में सरसरी तौर पर अध्ययन करने पर (प्रेरितों 28:11), हम ''प्रिय परदेशियों''[4] के कुछ उदाहरण देखेंगे।

टापू पर रहने वाले लोग परदेशियों के प्रति दयालु थे (28:1-7)

मिलेतुस के कुछ लोगों ने जहाज़ को डूबते हुए देखा था। जहाज के डूबने की ख़बर फैल चुकी थी और बहुत से स्थानीय लोग समुद्र के किनारे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। टापू पर रहने वाले लोगों के लिए डूबे हुए जहाज़ से बचे पीड़ितों की हत्या करना और उनकी बहुमूल्य वस्तुएं लूटना आम बात थी। परन्तु, लूका ने टिप्पणी की कि ''उन जंगली लोगों ने हम पर अनोखी कृपा की; क्योंकि मेंह के कारण जो बरस रहा था और जाड़े के कारण उन्होंने आग सुलगाकर हम सब को ठहराया'' (प्रेरितों 28:2)। उस टापू के लोगों के लिए जहाज़ के लोग परदेशी थे, परन्तु ये परदेशी विपत्ति में थे। मिलेतुस के निवासियों ने इनका सत्कार किया।

उनकी मेहमाननवाजी का एक बड़ा कारण आयत 7 में स्पष्ट होता है जहां लूका ने कहा ''... पुबलियुस नामक उस टापू के प्रधान ... ने हमें अपने घर ले जाकर तीन दिन तक मित्रभाव से पहुनाई की।'' मिलेतुस का राज्यपाल,[5] पुबलियुस स्वयं पहुनाई करने वाला आदमी था और उसने ऐसा करके अन्य नागरिकों के लिए अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया। जब आपको कहीं पहुनाई करने वाले लोग मिलें, तो निरपवाद रूप से आपको उनमें एक मुखिया मिलेगा जो यह दिखाता है कि मेहमाननवाज़ी का मतलब क्या है। यह एक कारण है कि 1 तीमुथियुस 3:2 और तीतुस 1:8 के अनुसार प्रभु की कलीसिया के प्राचीनों के लिए पहुनाई करने वाले होना आवश्यक है। वे मेहमाननवाज़ अर्थात पहुनाई करने वाले नहीं होंगे, तो मण्डली भी नहीं होगी।

पौलुस परदेशियों के प्रति दयालु था (28:8-10)

केवल टापू के लोगों ने ही परदेशियों के लिए अपना प्रेम और दिलचस्पी नहीं दिखाई थी। पुबलियुस के पास जाने पर पौलुस को पता चला कि उसका पिता मालटा बुखार से पीड़ित है।[6] उसी समय, ''पौलुस ने उसके पास घर में जाकर प्रार्थना की, और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया'' (आयत 8क)। उस चंगाई की ख़बर फैलने से टापू पर सब बीमारों को पौलुस[7] के पास लाया गया था और वे चंगे हो गए थे (आयत 9)।

आतिथ्य सत्कार (अर्थात मेहमाननवाज़ी) बदले में कुछ पाने के लिए नहीं किया जाता है, क्योंकि प्राय: ऐसे अतिथियों के पास लौटाने के लिए न तो साधन होता है और न ही अवसर। परन्तु, कई बार दोनों ओर से एक दूसरे की सहायता हो जाती है, इसलिए नहीं कि इस प्रकार की योजना बनाई गई होती है बल्कि अचानक (संयोग से) हो जाता है। पौलुस उन लोगों की सहायता करने के योग्य था जिन्होंने उसकी सहायता की थी। आगे, लूका ने टिप्पणी की कि वहां के लोगों ने ''हमारा बहुत आदर किया'' (आयत 10क)। बाद में, उसने कहा, ''और जब हम चलने लगे, तो जो कुछ हमें अवश्य था, जहाज पर रख दिया'' (आयत 10ख)। पौलुस और उसके साथ के लोग जब समुद्र किनारे पहुंचे थे तो उनके पास कपड़ों को छोड़कर बहुत कम वस्तुएं थीं; मिलेतुस के इन कृतज्ञ लोगों ने उनके लिए वह सब सामान रख दिया जो रोम की यात्रा जारी रखने के लिए उन्हें चाहिए था।

विश्वासी लोग एक परदेशी के प्रति दयालु थे (28:11-15)

हमने ''परदेशी'' शब्द का इस्तेमाल इसके बहुत ही साधारण अर्थ अर्थात ऐसे व्यक्ति के लिए किया है जिससे हम पहले कभी नहीं मिले थे, और उससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। कभी-कभी, बाइबल परमेश्वर के उन बच्चों के लिए इस शब्द का इस्तेमाल करती है जिन्हें उत्साह की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, लैव्यव्यवस्था 25:35 में मूसा ने

लिखा, ''फिर यदि तेरा कोई भाई-बन्धु कंगाल हो जाए, ... तो तू उसको सम्भालना; वह परदेशी व यात्री की नाईं तेरे संग रहे।'' फिर, नये नियम में, यूहन्ना ने भाइयों की विशेषकर उनकी ''जो परदेशी भी हैं'' सहायता करने के लिए कहा (3 यूहन्ना 5ख)।

रोम जाते समय, पौलुस उन भाइयों से मिला जिनसे वह पहले कभी नहीं मिला था, और उन्होंने उसे ग्रहण करके उत्साहित किया। लूका ने आयत 15 में कहा है, ''वहां से भाई हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के चौक और तीन-सराय तक हमसे भेंट करने को निकल आए जिन्हें देखकर पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया, और ढाढ़स बान्धा।''

''परदेशी'' की इस विस्तृत अवधारणा का इस्तेमाल करके हम सम्भवत: उन बहुत से लोगों के बारे में विचार कर सकते हैं जिन्हें हम उतना नहीं जानते जितना जानना चाहिए अर्थात अपने समाजों में, अपने कार्य के स्थान पर, उन मण्डलियों में जहां हम जाते हैं, और यहां तक कि अपने घरों में जिनकी हमें सहायता करनी चाहिए![8]

सारांश

आइए,बाइबल में पहुनाई के बारे में कुछ निर्णायक अवलोकन करते हैं:

(1) पहुनाई करने का अर्थ कभी-कभी इब्राहीम की तरह लोगों को अपने घरों में निमन्त्रण देना और भोजन कराना हो सकता है और है भी, परन्तु इसकी सीमा यहां तक ही नहीं है। ''परदेशी से प्रेम करने वाला'' होने का अर्थ है कि हम दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हैं और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इस पाठ में, हमने देखा कि परदेशियों की अलग-अलग आवश्यकताएं थीं अर्थात उन्हें सेंकने के लिए आग, रहने के लिए जगह, स्वास्थ्य तथा उत्साह की आवश्यकता थी। प्रेरितों 28 वाले ''परदेशी से प्रेम करने वाले'' उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रति दयालु थे।

(2) सच्ची मेहमाननवाज़ी सहायता देने की पेशकश में नहीं, बल्कि सहायता देकर स्नेह से व्यक्त की जाती है। इस विचार ने कि मेहमाननवाज होने के लिए अपव्ययी होना आवश्यक है, मेहमाननवाज़ी की भावना को किसी भी अन्य बात से अधिक हतोत्साहित किया गया है। एक औरत विलाप करने लगी, ''मैं तो गलत ही सोचती रही कि पहुनाई करने वाले होने का अर्थ है कि तैयारी में इतने थक जाओ कि अतिथियों के आने तक मैं दरवाज़ा खोलने के बजाय बिस्तर पर पहुंच जाऊं''[9] हमारे पाठ में मेहमाननवाज़ी की बहुत सी बातें या तो बहुत सस्ती हैं या बिल्कुल मुफ़्त, जैसे जहाज़ से बचे कांप रहे यात्रियों के लिए आग जलाना, पौलुस का स्वागत करने के लिए अप्पियन मार्ग तक जाना, परन्तु जिनका सत्कार किया गया उनके लिए ये बातें अमूल्य थीं।[10]

(3) मेहमाननवाज़ी का अर्थ अपनी सम्पत्ति दूसरों के साथ बांटना उतना नहीं है जितना कि अपने आपको। किसी ने ''मेहमाननवाजी'' की परिभाषा देते हुए कहा है कि यह ''एक ऐसी स्वतन्त्र एवं मित्रतापूर्ण जगह है जहां पर हम परदेशियों तक पहुंच सकते हैं और उन्हें अपने मित्र बनने का निमन्त्रण दे सकते हैं।''[11] जिस औरत ने यह अंगीकार किया

कि अतिथियों के पहुंचने तक वह थक जाती थी, उसने यह सबक सीखा: ''[आतिथ्य का] मुख्य उद्देश्य अपने अतिथियों को भोजन खिलाना नहीं है, खाना तो वे अपने घर में भी खा सकते हैं। भोजन से अधिक महत्वपूर्ण है अपने आपको, अपने प्रेम को, अपनी दयालुता को उनके साथ बांटना और आपके अतिथियों को आपसे केवल यही मिल सकता है!''

मैंने इस पाठ का शीर्षक ''पहुनाई करने की उत्तम कला'' दिया है। हममें से कई लोगों के लिए, यह शीर्षक ''पहुनाई करने की *खोई हुई* कला'' होना चाहिए? परमेश्वर हम सबकी सहायता करे कि हम ''परदेशियों से प्रेम'' करने वाले बन सकें।

पाद टिप्पणियां

[1]''अतिथि'' के लिए अंग्रेजी शब्द ''hospitable'' (*hospes*) के लिए लातीनी शब्द से निकला है। इस अंग्रेजी शब्द का ''अर्थ'' उस शब्द से व्यापक है जिसका यह अनुवाद है। [2]व्यवस्थाविवरण 26:12; अय्यूब 31:32; भजन 146:9; यिर्मयाह 22:3; जकर्याह 7:10 भी देखिए। पुराना नियम परदेशियों द्वारा लिए जाने वाले लाभ से चौकस रहने की भी चेतावनी देता है (भजन 109:11; नीतिवचन 11:15; आदि)। हमें पहुनाई करने वाला होना चाहिए, भोला नहीं। [3]ये वे विधवाएं थीं जिन्होंने अपने आपको देह अर्थात कलीसिया की सेवा के लिए अर्पित कर दिया था और इसलिए कलीसिया उनकी सहायता करती थी। NASB में इस आयत में ''hospitality'' शब्द प्रयुक्त हुआ है, परन्तु मैंने ''आतिथ्य सत्कार'' की पहली सूची में इसे शामिल नहीं किया था क्योंकि जिस यूनानी शब्द का अनुवाद ''पहुनाई करना'' हुआ है उसका अर्थ ''परदेशियों से *प्रेम* '' करने के बजाय ''परदेशियों का *सत्कार करना*'' है। [4]''प्रेरितों के काम, भाग-5'' में ''जब आप अपने आपको वहां पाएं जहां आप होना नहीं चाहते'' पाठ में विस्तार से यह चर्चा की गई थी, इसलिए इस पाठ में मेरी टिप्पणियां संक्षिप्त होंगी। यदि इस पाठ को प्रवचन के रूप में इस्तेमाल किया जाए, तो इसके बारे में कई बातें अपने आप ही कही जा सकती हैं। [5]''प्रेरितों के काम, भाग-5'' के पाठ ''जब आप अपने आपको वहां पाएं जहां आप होना नहीं चाहते'' में आयत 7 पर नोट्स देखिए। [6]''प्रेरितों के काम, भाग-5'' के पाठ ''जब आप अपने आपको वहां पाएं जहां आप होना नहीं चाहते'' में आयत 8 पर नोट्स देखिए। [7]शायद वे डॉक्टर लूका के पास भी आए (''प्रेरितों के काम, भाग-5'' के पाठ ''जब आप अपने आपको वहां पाएं जहां आप होना नहीं चाहते'' में आयत 9 पर नोट्स देखिए)। [8]पाठ को *व्यावहारिक* बनाने के लिए स्थानीय परिस्थितियों को लागू करना चाहिए। [9]*बेवरली लेहाये, द स्पिरिट कंट्रोल्ड वूमैन।* [10]यहां पर प्रयुक्त उदाहरणों का सुनने वालों के लिए अर्थ होना चाहिए।

[11]हेनरी एच. एम. नऊवेन, *रीचिंग आउट* (डबलेड एण्ड कं., 1975), n.p. *द आंसर* में उद्धृत।